लुइस ग्लूक

नोबल विजेता कवयित्री की चुनिंदा कविताएँ

अनुवादः

भुवेंद्र त्यागी

लुइस ग्लूक

इस साल की नोबेल विजेता कवयित्री की चुनींदा कविताएं

अनुवाद :

भुवेन्द्र त्यागी

Louise Gluck

Selected Poems of this year's Nobel winner

आवरण इलस्ट्रेशन : अर्जन सिंह

Cover Illustration : Arjan Singh

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: फरवरी,2021

© भुवेंद्र त्यागी

Index

1. Confession 6
2. First Memory 8
3. The Myth of Innocence 10
4. The Night Migrations 16
5. A Fantasy 18
6. Odysseus' Decision 22
7. Love Poem 24
8. Summer 26
9. Saints 30
10. The Red Poppy 34
11. Snow 38
12. The Wild Iris 40
13. Snowdrops 44
14. Early Darkness 46
15. The Garden 50
16. Portrait 52
17. Poem 54
18. The Pond 56
19. The Garden 60
20. Happiness 64
21. Some Portions of Poems 68

अनुक्रमणिका

1.	कबूलनामा	7
2.	प्रथम स्मृति	9
3.	मासूम मिथक	13
4.	रात्रि प्रवास	17
5.	फंतासी	20
6.	ओदिसियस का निर्णय	23
7.	प्रेम कविता	25
8.	गरमियों का मौसम	28
9.	संत	32
10.	लाल पोस्ता	36
11.	बर्फ	39
12.	जंगली आइरिस	42
13.	गुलचांदनी	45
14.	आदि अज्ञानता	48
15.	बगीचा	51
16.	चित्र	53
17.	कविता	55
18.	पोखर	58
19.	बगीचा	62
20.	सुख	66
21.	कुछ कवितांश	72

भूमिका

जिंदगी की संजीदा आवाज

अमेरिकी कवयित्री लुइस ग्लुक (77) को साल 2020 के लिए साहित्य का नोबल पुरस्कार दिया गया है। उन्हें 1993 में साहित्य का प्रतिष्ठित पुलित्जर पुरस्कार मिल चुका है। पोलिश लेखिका विस्वावा सिंबोर्स्का के बाद यह पुरस्कार प्राप्त करने वाली वह दूसरी महिला कवयित्री हैं। सिंबोर्स्का को 1996 में यह पुरस्कार मिला था। वैसे साहित्य का नोबेल पाने वाली वह 16वीं और टोनी मॉरिसन (1996) के बाद पहली अमेरिकी महिला हैं।

1943 में न्यूयॉर्क में जन्मी लुइस ग्लुक कैंब्रिज (मैसाच्युसेट्स) में रहती हैं। वह येल यूनिवर्सिटी में अंग्रेजी की प्रफेसर हैं। उनकी पहली किताब 'फर्स्टबोर्न' 1968 में प्रकाशित हुई थी। तब वह केवल 25 वर्ष की उम्र में साहित्य की दुनिया में जाना-माना नाम बन गई थीं। अब तक उनके 12 कविता संग्रह आए हैं। उनके कविता संग्रहों 'द हाउस ऑन मार्शलैंड', 'डिसेंडिंग फिगर', 'द ट्रम्फ ऑफ अकिलीस', 'द वाइल्ड आइरिस' और 'द फेथफुल एंड वर्चुअस नाइट' की दुनिया भर में सराहना हुई है।

उनके लेखन में पारिवारिक जीवन के विषय, तीक्ष्ण गोपनीयता और रचना के परिष्कृत अर्थ गुंथे होते हैं। उन्होंने बचपन, पारिवारिक जीवन और बच्चों के साथ माता-पिता के रिश्ते जैसे विषयों पर संजीदा कविताएं लिखी हैं। ये कविताएं उनके अस्तित्व को सार्वभौमिक बनाती हैं। उनकी कविताओं में उनके सपनों और भ्रमों के बारे में जो कुछ बचा है, उसे कहा गया है। वह निराशा, बेकद्री, अपमान, पराजय, पलायन और एकाकीपन पर इतनी प्रभावी कविताएं रचती हैं कि आखिर में उम्मीद की रोशनी ही नजर आती है। असफल प्रेम के बाद भी वह इसलिए प्रेम का उत्सव मनाती नजर आती हैं कि वह कभी तो था और कभी तो फिर लौटेगा!

ग्लुक की भाषा की सहजता जादुई है। वह आम जन की बोली-बानी में कविताएं रचती है, इसलिए उनकी कितनी ही कविताएं जाने कितनों को अनूभूत लगती हैं। इनके बिंब और कथ्य भी सर्वकालीन और

सर्वव्याप्त हैं। इन कविताओं की आंतरिक और बाह्य लय सामान्य से लेकर विशिष्ट तक- सभी पाठकों के मन को सम्मोहित करती हैं। उनके सामान्य मुहावरे भी एक अर्थ वैशिष्ट्य प्रदान करते हैं। ये कविताएं आत्मकेंद्रित भले ही लगें, लेकिन ये समावेषी और परिवेशी हैं। इनमें संवेदनाएं हैं, एकाकीपन है, जटिल पारिवारिक रिश्ते हैं, तलाक है, मृत्यु है, मगर तमाम विषमताओं के बीच माधुर्य और आशा भी है।

लुइस ग्लुक की 20 कविताओं और कुछ कवितांशों का मैंने अनुवाद किया है। अनुवाद की यह प्रक्रिया बहुत सहज रही है, क्योंकि लुइस ग्लुक की कविताएं हर जन के मन की हैं। वह सरल भाषा और मुहावरों का इस्तेमाल करती हैं। ये बहुत कुछ अपने से हैं। इसीलिए इनका साधारणीकरण अनायास होता है। इन कविताओं का देशकाल भी सार्वभौमिक हो गया है। दरअसल ये संबंधों की रचनाएं हैं, इसलिए भी इनका रूपांतरण सरल रहा।

***